

# શ્રી શરૂજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ



શરૂજય એકેડમી, શ્રી પદ્મપ્રભસ્વામી જૈન મંદિર, સ્ટેશન રોડ, ચાણીસગામ - ૪૨૪ ૧૦૧.

## સમ્યગ્જ્ઞાન વિશારદ

Answer sheet

અભ્યાસક્રમ નંબર : ૫

## ◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆

એન્ટરેલમેન્ટ નંબર

વિદ્યાર્થીનું નામ -

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

(૧) કૃપાકૃતીએ	(૨) નેર્દીનિક્રિયા	(૩) સિદ્ધિદુઓ	(૪) નિસ્પૂણપણા	(૫) દ્વારાનળ શુદ્ધકુટા	(૬) શ્રી શાંતિનાથ લગાવાન	(૭) લયાન અનુભ્વાન	(૮) સૂર્યદીવા	(૯) એડ નેમિયા	(૧૦) આસનજરા	(૧૧) ઉપશમાદિ	(૧૨) ગૌપાણી	(૧૩) ૧ પદ્ધ્યોપમ	(૧૪) પરવાન	(૧૫) અન્તિક્રિક	(૧૬) ઉપાદીય	(૧૭) વંહમ	(૧૮) નિવાસસ્થાની	(૧૯) અસંખ્યાતા	(૨૦) સ-મશાન બ્લૂબ્રિ
---------------	--------------------	---------------	----------------	------------------------	--------------------------	-------------------	---------------	---------------	-------------	--------------	-------------	------------------	------------	-----------------	-------------	-----------	------------------	----------------	----------------------

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧) દૈવાક	(૨) મિચાલ્વોઝીનું	(૩) અનુંપા	(૪) ઝાનોપચોગ	(૫) મિચાલ્વા ઉદ્યાધી	(૬) અંગનકારીનું	(૭) અનુભ્વાન	(૮) સંપૂર્ણક સંવિન્દ	(૯) અનોઝી કુલિન્દી	(૧૦) શ્રી શાંતિનાથ લગાવાન	(૧૧) ચિદાનન શુદ્ધિનો	(૧૨) સંવિન્દ દ્વારા	(૧૩) આર્દ્ધ સુદ્ધિસ્તંસૂરી	(૧૪) દીર્ઘાય થાઓ	(૧૫) અંતર્ભૂતી
-----------	-------------------	------------	--------------	----------------------	-----------------	--------------	----------------------	--------------------	---------------------------	----------------------	---------------------	----------------------------	------------------	----------------

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧) આયુર્જ્ય સિદ્ધાતિ	(૨) આપો	(૩) ખલો	(૪) તૈત્રીસુ
-----------------------	---------	---------	--------------

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧) ચ	(૬) ર	(૭) ખ	(૮) પ	(૯) ન	(૧૦) પ
(૨) ક	(૭) ર	(૮) ખ	(૯) પ	(૧) ચ	(૧) ચ
(૩) ખ	(૮) ર	(૯) ખ	(૧) પ	(૨) ચ	(૨) ચ
(૪) ન	(૯) ર	(૩) ખ	(૧) પ	(૪) ચ	(૪) ચ
(૫) નો	(૧૦) ર	(૭) ખ	(૧) પુ	(૫) ચ	(૫) ચ

$$+ + + + + + + + = \text{કુલ ગુગુ}$$

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુગુ + પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુગુ = કુલ ગુગુ

શીર્ષક

તપાસનારની સહી

१. आत्माने मोक्ष साथे भेदनारुने योगात्मक कहुवारा है तथा आत्माने मोक्ष साथे भेदनारु अनुष्ठानने कहुवारा-  
अवश्यम अद्य अनुष्ठान कहुवारा है तदहेतु अनुष्ठान तथा असृत अनुष्ठान पर्याप्त आत्माने मोक्ष साथे भेदनारु  
आवाही तेजने योगात्मक अद्य अनुष्ठान कहुवारा है योगात्मक अनुष्ठान उच्छालि लेतेही वार मुक्तरुं है ① इत्योग  
योग महनुष्ठान -- ② प्रवृत्तियोग महनुष्ठान -- ③ अधिर योग महनुष्ठान -- ④ शिरदेयोग अद्य अनुष्ठान -- यथा शाकी उल्लास-  
पूर्वक अनुष्ठान उच्छालि आवेते उच्छालि आगवो ३५३६ विशेष शाकीज आवाहनानुं अनुसारा, अत्यंत उल्लासपूर्वक कियानुं  
आवाहन ते प्रवृत्तियोग -- अतिचारनो दौष उभी अब हे तेही आवाहन आवाहन निजाना होयती मुझ बनी शिरदापूर्वक नी किया ते इत्योग  
योग -- शिरदेयोग आगु-आगुन वातावरणगते ए वातावरणना लगीने अपश्च वे त्यारे तेजे ३५३७ इत्योग अद्य अनुष्ठान कहुवारा --  
२. उपायत ऐसे जन्म अने व्यवन ऐसे भरा -- अहीं ३५३८ मुक्तरागां उपायत अने व्यवन व्यारुनी वात जग्मा वतां  
कहेतुं हे के ऐसे अमरामां अद्यावा ऐकममाने विषे गर्वज तिर्यंचना, लेहीन्देयना अने तेहीन्देयना अंख्याता उपायत --  
व्यवन वारा है -- अजिग्राह्य, नारक अने हैताना अंख्याता उपायत-व्यवन वारा है -- गर्वज मनुष्ठाना अंख्याता  
उपायत-व्यवन वारा है -- वनत्पतिकाराना अनंता उपायत-व्यवन वारा है अने पूर्ववीकार, अपकार, तेवेकार अने  
वारुकायना अंख्याता उपायत-व्यवन वारा है -- ऐसे अमरामां अंख्याता -- अंख्याता उपायत-व्यवन वारा है --  
मरुष्टा वारा है आवा तेजना अवो आपारो कही आवरा ३५३९-१ ऐ ऐ विषे विवाहीरो ते जड़दृढी आपारी विवाह  
में दृष्टि वारा -- माटे आ व्यारो अमरा अना उपर विंतन-मनन कहुं ऐहरे --  
३. ऐसे वर्खने मग्गाद्याग्नि वर्गे प्राकृत पाठ बोलनां अन्तर्दर्शनीये हांसीकरनां देखी ते लज्याया -- आत्मावस्थाएः ज तेजने  
संस्कृतनो अव्यास इतो अने वही कर्मदोषयो आवी शिरदेयने नकार वृद्धुं "नमोदृक्तुमेद्यार्थापात्याय अर्व साधुवा  
ऐतुं ऐसे ५६ संस्कृतमां बनावी दीयुं पछी व्यास शिद्यांतो संस्कृतमां करवा उमें वाची त्यारे संदे माही कही दीयुं हे : " आग, जी,  
में युद्धिवाहा, शुर्व के व्यारित तेवा उच्छाला शायना होय तेजोने प्राकृत होय तो अहुलाहरी शीर्षी शाकारा -- शेषोनी हया मारे  
तन्वना भूगाकारो आगाहयी ४ शिद्यांतो प्राकृत लोकवाहामां कहेता है -- इं तेजा करनां तमे व्यास युद्धिवाहा वारा हे प्राकृतम्  
बनावेत मिद्यानो संस्कृतमां देखो हो २ व्यास युद्धिवाहायो माटे व्योद पूर्वकां संस्कृतमां नहीं ३ या तमे जिनस्त्वा विस्तर कहुं  
तेही तेजने "पार्श्वायित" नाम्नु नाम्यावृत्त व्यापवमां आवर्य -- पार्श्वायित के आलोचना माटे व्यास वर्क शुल्ली ग्रह अद्वृत पुकारा --  
४. ज्यां मन हे त्यां पवन हे अने ज्यां पवन हे त्यां मन हे -- व्येम कहुवारा है -- हृष्य अने पार्श्वी जैसे ऐकलीभामां लाही अब हे ते  
अने ऐकउप थर्ड भाय हे तेम मन अने पवन ऐकलीभानी आदे ऐकउप थर्ड थर्डो है -- ऐकना नाशायी वीभनी नाश वारा है --  
मनना नाशायी पवननो नाश वारा है अने मननी प्रवृत्तियो पवननी प्रवृत्ति वारा है -- ऐही ४ मन अने पवनना हेगनो  
नाश करवाए अर्व इन्द्रियो उपर उत मेहवी शाकारा है -- इन्द्रियो उपर विजय प्राप्त करवाए औ मोक्षनी प्राप्ति वारा है -- ऐही  
५ अपूर्व-व्यास अने कुलक व्यानना कमाही पवनने अंतर लेवानु-देवानुं-अने अंतरु करवानुं वारा है, तेही पवनने  
आदान करवाए शिल ऐकार वारा है -- मन आव अमाधीमां निष्कार वारा है -- तेही ५ व्येम कहुवायुं हे के पवनने  
ज्ञातवाही मनने ज्ञाता है -- जे आशकने मनने ज्ञातुं इहो तो ऐने पवनने ज्ञातुं पूर्वो --  
६. श्री शांतीनाथना प्रलावयी उपकरी, ग्रहीनी दृष्टगति, दुःखपत, दुर्द अंगांकुराग अने दृष्ट निमिलादिनो नाश करवानुं तथा  
आत्माद्वित अने मंपानीने प्राप्त करववाह क्षीशांतीनाथ लगवाननुं नाशोश्चाराग ज्या पानी है -- श्री संघ, जगतनां जनपदो,  
महाराजाओ, राजाओनां निवासस्थानो, विद्वद्वान्दीना भवतो तथा अत्यग्नाय नागरीकोनो नाम लग्नेदिने शांती बोलनी  
ओहर्यो -- श्री अमागांधने शांती वार्यो, श्री जनपदो (हेषो) नेवान्ति वार्यो -- श्री राजाधीपो (महाराजाओ) ने शांती वार्यो -- श्री  
शांतेषोनां निवास व्यानोने शांती वार्यो -- श्री गोप्तिकोने-विद्वद्वान्दीना सत्योने शांती वार्यो -- श्री अग्रगामी  
नागरीकोने शांती वार्यो -- श्री नगर जनोने शांती वार्यो -- श्री अद्वानोने शांती वार्यो -- शांतीनाथ दादायी,  
अमना प्रलावदी व्येवा विशेष लाल जुकोने वारा है --